मेर जीवन का उद्देश्य क्या है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

सदियों से लोग यह गहरा सवाल पूछते आए हैं: “मैं यहाँ क्यों हूँ? मेरे जीवन का असली मकसद क्या है?”

यीशु मसीह को जानने से पहले यह प्रश्न मुझे बहुत परेशान करता था। आज भी बहुत से लोग जीवन का अर्थ ढूँढ रहे हैं—सोचते हैं कि हम बिना चाहे क्यों पैदा हुए और मौत अचानक बिना बताए क्यों आ जाती है। ये सवाल हमें मजबूर करते हैं पूछने के लिए: जीवन का अर्थ क्या है? इसे किसने रचा?

जीवन के अर्थ की खोज

हर इंसान स्वाभाविक रूप से उत्तर ढूँढना चाहता है। कुछ इसे ज्ञान में खोजते हैं—मानते हैं कि शिक्षा और समझ जीवन का रहस्य खोल देगी। कुछ सुख, सफलता, रिश्तों या धन के पीछे भागते हैं। लेकिन इतिहास के सबसे बुद्धिमान और धनी राजा, सुलैमान, ने हमारे लिए इन सब राहों को आज़माया।

बाइबल कहती है:

“परमेश्वर ने सुलैमान को अत्यधिक बुद्धि और समझ दी, और
समुद्र की रेत के समान बहुत बड़ी बुद्धि दी।”

मेर जीवन का उद्देश्य क्या है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

— 1 राजा 4:29

इस बुद्धि और असीम संसाधनों के साथ सुलैमान ने जीवन का अर्थ जानने के लिए हर रास्ता अपनाया। उसने सृष्टि का अध्ययन किया, मानव ज्ञान को खोजा, अपार धन इकट्ठा किया, सुख भोगा, भव्य निर्माण किए और असंख्य स्त्रियों से घिरा रहा। लेकिन अंत में उसका निष्कर्ष चौंकाने वाला था:

“सब व्यर्थ है, सब व्यर्थ है! उपदेशक कहता है, सब कुछ व्यर्थ है।”
— सभोपदेशक 1:2

वह यह भी मानता है:

“क्योंकि जहाँ बहुत ज्ञान है, वहाँ बहुत शोक है; और जो ज्ञान बढ़ाता है, वह दु:ख भी बढ़ाता है।”
— सभोपदेशक 1:18

मेर जीवन का उद्देश्य क्या है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

यह हमें दिखाता है कि परमेश्वर से अलग होकर इस संसार की हर चीज़ अस्थायी और अंततः निरर्थक है।

सच्चे अर्थ का स्रोत – परमेश्वर

आखिर में सुलैमान ने जीवन का वास्तविक उद्देश्य ऐसे बताया:

“सब बातों का निचोड़ यह है: परमेश्वर का भय मान और उसकी
आज्ञाओं को मान, क्योंकि यही हर मनुष्य का पूरा कर्तव्य है। क्योंकि परमेश्वर हर काम का न्याय करेगा, यहाँ तक कि हर
गुप्त बात का भी, चाहे वह अच्छी हो या बुरी।”
— सभोपदेशक 12:13–14

मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था (उत्पत्ति 1:26–27), ताकि उसकी महिमा प्रकट करे और उसके साथ संगति में रहे। लेकिन जब आदम के द्वारा पाप दुनिया में आया (रोमियों 5:12), तब यह संगति टूट गई और मनुष्य ने सृष्टिकर्ता की जगह सृष्टि में ही उद्देश्य ढूँढना शुरू कर दिया (रोमियों 1:25)। इसलिए परमेश्वर से दूर मनुष्य बेचैन रहता है—दौड़ता है पर कभी तृप्त नहीं होता।

मेर जीवन का उद्देश्य क्या है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

संत ऑगस्टीन ने ठीक ही कहा था: “हे प्रभु, तूने हमें अपने लिए बनाया है, और जब तक हम तुझमें विश्राम नहीं पाते, तब तक हमारा हृदय अशांत रहता है।”

उत्तर मसीह में

नए नियम में हमें पूरा उत्तर मिलता है: हमारा उद्देश्य यीशु मसीह के द्वारा पुनःस्थापित होता है।

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश
न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।”
— यूहन्ना 3:16

अनन्त जीवन सिर्फ़ कभी न ख़त्म होने वाला अस्तित्व नहीं है, बल्कि परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना है। यीशु ने कहा:

“अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे, जो अकेला सच्चा परमेश्वर है,
और जिसे तूने भेजा है, अर्थात यीशु मसीह को जानें।”

मेर जीवन का उद्देश्य क्या है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

— यूहन्ना 17:3

इसका अर्थ है कि जीवन का उद्देश्य है परमेश्वर को जानना, उससे प्रेम करना, और यीशु मसीह के द्वारा उसके साथ संबंध में जीना।

मसीह के बिना जीवन खाली खोज है। लेकिन मसीह के साथ जीवन अनन्त महत्व और अर्थ से भर जाता है।

इस उद्देश्य को जीना

जब हम मसीह को ग्रहण करते हैं, वह हमारे जीवन को बदल देता है। जैसा कि पौलुस लिखते हैं:

“इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह एक नई सृष्टि है। पुराना बीत गया है; देखो, सब कुछ नया हो गया है।”
— 2 कुरिन्थियों 5:17

यह नया जीवन तीन बातों से पहचाना जाता है:

1. परमेश्वर का भय – उसकी आराधना और आज्ञाकारिता में जीना।

मेर जीवन का उद्देश्य क्या है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

2. उसकी आज्ञाओं का पालन – अपने मन की नहीं, बल्कि उसके वचन के अनुसार जीवन जीना।
3. अनन्त जीवन की आशा – मृत्यु और भविष्य की चिंताओं से मुक्त होना।

सुलैमान ने मनुष्यों की अनिश्चितता को ऐसे व्यक्त किया:

“क्योंकि कोई नहीं जानता कि भविष्य में क्या होगा, और कौन
उसे बता सकता है कि यह कैसे होगा?”
— सभोपदेशक 8:7

लेकिन मसीह हमें इस अनिश्चितता से मुक्त करता है। इसलिए हम आत्मविश्वास से कह सकते हैं:

“क्योंकि मेरे लिये तो जीवित रहना मसीह है, और मरना लाभ है।”
— फिलिप्पियों 1:21

एक निमंत्रण

यदि आप जीवन के उद्देश्य की खोज में हैं, तो उत्तर स्पष्ट है: वह केवल यीशु मसीह में है। वही जीवन का अर्थ है, वही अनन्त आनन्द का

मेर जीवन का उद्देश्य क्या है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

स्रोत है, वही हमारे अस्तित्व की परिपूर्णता है।

आज ही आप यह निर्णय ले सकते हैं। यदि आप अपने पापों को मान लें, यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता मानकर अपने हृदय में ग्रहण करें, तो वह आपके पाप क्षमा करेगा और आपको अनन्त जीवन देगा (रोमियों 10:9–10)।

इसके बाद अपने विश्वास को जीएँ: पाप से दूर हों, यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लें (प्रेरितों के काम 2:38), और ऐसी कलीसिया से जुड़ें जो बाइबल पर विश्वास करती हो, जहाँ आप उसके वचन और संगति में बढ़ सकें।

यही है जीवन का सच्चा उद्देश्य: परमेश्वर की महिमा करना, सदा उसमें आनन्दित रहना, और उसके पुत्र यीशु मसीह में अनन्त आशा पाना।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp